प्रो० रोशन कुमार
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज
बिरौल

[2]

प्रश्न :- "बिहारी ने अपने दोहों में 'गागर में सागर' भर दिया है—" कथन की युक्तिसंगत विवेचना कीजिए।

[2.]

उत्तर :— रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारीलाल की केवल एक ही रचना उपलब्ध है और वह है 'सतसई'। जैसा नाम से स्पष्ट है, यह पुस्तक 713 दोहों का संग्रह है। 'सतसई' की रचना बिहारी लाल ने महाराज जय सिंह के लिए की थी। बिहारीलाल ने निम्नलिखित दोहों में इसका संकेत किया है—

" हुकुम पाय जयसाह को, हरि राधिकाप्रसाद ।
करी बिहारी सतसई, भरी अनेक सवाद ॥ "

बिहारी-सतसई रसिकजनों का कण्ठहार है। इसकी प्रसिद्धि इसी से जानी जा सकती है कि हिन्दी में तुलसी-कृत रामचरितमानस को छोड़कर किसी अन्य ग्रंथ की उतनी टीकाएँ नहीं लिखी गई, जितनी बिहारी सतसई की।

अंग्रेजी विश्वकोष में लिखा है कि 'सतसई' काव्य-कला की 'सर्वाधिक प्रतिष्ठित कृति है।'

(4) बिहारी के काव्य के तीन विषय हैं — श्रृंगार, नीति और भक्ति। किन्तु मुख्यत: बिहारी श्रृंगार-रस, जिसे आदिरस भी कहा जाता है, के कवि हैं। हिन्दी-साहित्य में श्रृंगार-रस को अमरता का घूँट पिलाने-वाले कवि बिहारी लाल ही हैं। बिहारी ने अपनी कविताओं में श्रृंगार की रसधार बहाई है, जिससे समीप आते ही रसिक जन या रसिक-समाज को अपूर्व तृप्ति मिलती है। हिन्दी साहित्य में यदि सूरदास भक्तिरस के, तुलसीदास शांत-रस के और भूषण वीर रस के आचार्य हैं; तो रसिक बिहारीलाल श्रृंगार-रस के सिद्ध कवीश्वर हैं। रूप स्वभाव, मनोविज्ञान, भंगिमा — सबका वर्णन बिहारी लाल ने इतना चित्रवत् किया है कि उनकी कला की बारिकी और सूझ पर मुग्ध रह जाना पड़ता है। रसानुभूति है कि उन्हें पढ़ते ही पाठक की कल्पना और जिज्ञासा तीव्रता की सीमा पर पहुँचकर रसमग्न हो जाती है ...

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भूषण भार सँभारिहै क्यों यह तन सुकुमार ।
सूधो पाँय न परत महि, शोभा ही के भार ।।

सुन्दरी का शरीर इतना सुकुमार है कि गहनों का भार भी उससे सँभाला न जाएगा। अरे, उसके पाँव तो अपनी शोभा के भार से डगमगा रहे हैं। 'सूधो पाँय न परत महि' (सीधे पाँव नहीं पड़ता, थानी 'ठिठका चलना') मुहावरे के प्रयोग ने कितना जादू किया है। सुन्दरी से जैसे कहा जा रहा हो कि गहनों के बिना ही तो तुम बलखाती हुई ठिठककर चल रही हो, फिर यदि गहने पहन लोगी, ... जानी क्या करोगी? सादगी और मादकता का यह संयोग बिहारी-लाल की कविताओं में ही मिलेगा। सुन्दरता, सौकुमार्य और व्यंग्य की यह त्रिवेणी बिहारीलाल के शृंगारिक दोहों की अपनी विशेषता है।

सौकुमार्य-वर्णन की तरह ही रूप और शोभा-वर्णन भी अद्वितीय हुआ है। यहाँ भी बिहारीलाल ने विलक्षण सूझ का परिचय दिया है। जरा नायिका की बिन्दी और लट का वर्णन देखा जाए। गणित के विद्यार्थी जानते हैं कि किसी अंक के आगे शून्य लिख देने से उस अंक का मान दस गुणा बढ़ जाता है तथा बिकारी (ा) 'ऐसी टेढ़ी लकीर', अंक के पहले लगाने पर, दमड़ी का सूचक है और अंक के बाद लगाने पर उसकी शोभा कितनी बढ़ जाती है, अथवा उसके मुख पर एक तिरछी लट के छूट पड़ने से क्या गजब हो जाता है, इसका हिसाब केवल बिहारी लाल ही जानते हैं:—

1) कहत सबै बेंदी दिये, आँक दसगुनो होत ।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित होत उदोत ।।

2) कुटिल अलक छुटि परत मुख, बढ़िगौ इतो उदोत ।
बंक बिकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत ।।

इन उदाहरणों में पैनी सूझ के साथ ही कितनी स्वाभाविक सरसता है! अवस्था-वर्णन में बिहारी की वयः संधि-वर्णन प्रसिद्ध है। उस काल में बचपन का अल्हड़पन भी रहता है और जवानी का तनाव भी। इन दोनों के संयोग से स्त्री के अंगों का जो धूपछाही रंग होता है, उसका वर्णन देखिए —

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबन अंग ।
दीपति देह दुहुनि मिलि दिपति ताफता रंग ।।

बिहारी ने प्रत्येक हाव-भाव के वर्णन में कमाल कर दिया है। प्रेम का मनोविज्ञान अपनी असंगति और विचित्रता के लिए प्रसिद्ध है। प्रेम की दुनिया निराली होती है। प्रेम के सभी

नियम निराले हैं। प्रेम की असंगतियों और विरोधों का बड़ा अनूठा वर्णन बिहारी लाल ने किया है। उनका प्रसिद्ध दोहा है —

दृग उरुझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हिये, दई नई यह रीति॥

साधारण दुनिया में जो चीज (रस्सी आदि) उलझती है, वही टूटती है। जो टूटती है, उसे ही जोड़ा जाता है। जहाँ जोड़ा जाता है, वहीं गाँठ (गिरह) पड़ती है, लेकिन प्रेम में उलझती तो हैं आँखें, टूट जाते हैं परिवार के लोगों (माता-पिता आदि) के संबंध, जुड़ते हैं दो प्रेमियों के हृदय और गाँठ पड़ती है दूसरों की सफलता न देख सकने वाले दुर्जनों के मन में। वस्तुतः विधाता के नियम से प्रेम के नियम भिन्न हैं। बिहारी के इस दोहे में कितनी विदग्ध वास्तविकता है? आँखों की देखा-देखी होते ही दो व्यक्तियों को अपने-अपने परिवारों को छोड़कर एक नयी दुनिया बसाना, उस नयी दुनिया में दो अपरिचित हृदयों का एक होना और उस दुनिया को देखकर दुष्टों के दिलों पर साँप लोट जाना यह सब कितना वास्तविक और फिर कितने मार्मिक ढंग से कहा गया है।

बिहारी ने नायिका के विरहदशाओं का वर्णन करते हुए कहा कि नायिका इतनी दुर्बल हो गई है कि जब साँस लेती है, तब छह-सात हाथ पीछे चली जाती है और जब साँस छोड़ती है तब वह सात-हाथ आगे चली आती है, जैसे झूले में झूल रही हो।

इत आवत चलि जात उत चली छ-सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे-से रहै लगी उसासनु साथ॥

इसी वर्णन को देखकर शुक्लजी ने कहा था कि नायिका क्या हुई, घड़ी का पेंडुलम हो गयी।

नीति के दोहे भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं इन दोहों में जीवन ~~की कठोर~~ वास्तविकता पर बड़ी मार्मिक ~~उक्ति~~ उक्तियाँ कही गई हैं।

चलत न छाँड़त घटत हू सज्जन नेह गँभीर।
फीको परै न बरु फटै रँग्यौ चोल रँग चीर॥

जैसे सज्जन ज्यों-ज्यों उन्नति करते जाते हैं, त्यों-त्यों विनम्र होते जाते हैं— नल की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय।
जेती नीचौ ह्वै चलै तेतो ऊँचौ होय॥

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

[illegible] के [illegible] में हुआ उन आसक्तियों को देखा था और [illegible] का नशा धतूरे से भी बढ़कर होता है—

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात नर यह पाए बौराय॥

भक्ति के दोहे बिहारी ने जीवन के शेष-काल में लिखे होंगे; पर चाहे श्रृंगार के दोहे हों या नीति अथवा भक्ति के, बिहारी का कवित्व अपना सर्वत्र ही कौशल प्रदर्शित करता है।

बिहारी के कवित्व की पहली विशेषता है कल्पना की समाहार-शक्ति। एक-एक बारीक रूप बिहारी की कविता में मिलती है। फिर खूबी यह है कि वे कल्पनाएँ सुसंगठित रहती हैं। इसी शक्ति के कारण बिहारी ने एक-एक दोहे में अपार अर्थ-गांभीर्य भर दिया है। 'अर्थ अमित अरु आखर थोरे' — तुलसीदास की उक्ति को बिहारी ने चरितार्थ किया। गागर में सागर भरने का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण इसी कवि ने उपस्थित किया है। इस सम्बन्ध में बिहारी ने अपनी सतसई की आलोचना करते हुए ठीक ही कहा है कि—

सतसइया के दोहरे, अरु नावक के तीर।
देखन को छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर॥

संक्षिप्तता और सांकेतिकता के अतिरिक्त बिहारी की काव्यकला की दूसरी विशेषता है वाग्वैदग्ध्य या कथन चातुरी। इसी को बिहारी की खूबी कहते हैं जिसके कारण एक अपूर्व चमत्कार आ जाता है—

बिहारी की तीसरी विशेषता है शब्दों और मुहावरों की स्थापना। बिहारी की कविता के शब्दों को बदलकर यदि उनके पर्यायवाची अन्य शब्द रख दिए जाएँ, तो सारा चमत्कार चौपट हो जाएगा और अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

लीक नहीं यह पीक की; स्रुति-मन-मूल-कपाल।

यहाँ 'स्रुति' आदि शब्द बदले नहीं जा सकते। बिहारी की कविता में प्रत्येक शब्द एक विशिष्ट चित्र-ध्वनि और अर्थ रखता है—

बिहारी की चौथी विशेषता है श्लिष्ट शब्दों (अनेकार्थी शब्दों) का प्रयोग। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पद देखे जा सकते हैं—

गुनी-गुनी सब कोउ कहत निगुनी गुनी न होत।
सुन्यो कहूँ तरु अर्क ते अर्क समान उदोत॥

इन अनेकार्थी शब्दों के कारण बिहारी के काव्य में अर्थ का ऐसा गांभीर्य और विस्तार आया है कि आलोचकों ने इन्हें अक्षर-काम धेनु कहा है।

अतः बिहारी की कविता हिन्दी कविता-कामिनी के ललाट की बिंदी है, गागर में सागर भरने में अत्यंत सफल हुए हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner